अपभ्रंश कथाकाव्य : भारतीय संस्कृति

सबिता पाण्डे

डॉ० नवल किशोर पाण्डेय

डॉ० विश्वनाथ चौधरी

प्राकृत भाषा के समान अपभ्रंश भाषा को भी सैकड़ों वर्षों तक भारत की लोक भाषा अथवा जन भाषा होने का सौभाग्य मिला। भारतीय साहित्य में इसकी लोकप्रियता के सैकड़ों उदाहरण उपलब्ध होते हैं। ईस्वी 6 ठीं शताब्दी के पूर्व ही अपभ्रंश का खूब प्रसार हो गया था। संस्कृत और प्राकृत के साथ अपभ्रंश का भी पुराणों, व्याकरणों तथा शिलालेखों में उल्लेख होने लगा था। वैयाकरणों ने यह प्रादेशिक बोलियों के रूप में आगे बढ़ी। आठवीं शताब्दी तक यह जन भाषा के साथ–साथ काव्य भाषा भी बन गया और बड़े–बड़े कवियों का इस भाषा में काव्य निर्माण करने की ओर ध्यान जाने लगा। यद्यपि अपभ्रंश भाषा में अभी तक स्वयम्भू के पूर्व की कोई रचना उपलब्ध नहीं हो सकती है, लेकिन स्वयं स्वयंभू ने अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन जिन कवियों का उल्लेख किया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस भाषा में 8 वीं शताब्दी के पूर्व ही काव्य रचना होने लगी थी और यही नहीं इसे साहित्यिक क्षेत्र में भी आदर मिलने लगा था।